काशादिभ्य इलः प्रत्ययो भवति। काशिलम्। वाशिलम्।

काश। वाश। अश्वत्थ। पलाश। पीयूष। [1]विश। तृण। नर। चरण। कर्दम। कर्पूर। कण्टक। गृह। काशादिः।

तृणादिभ्यः शः प्रत्ययो भवति। तृणशः। नडशः।

तृण। नड। बुस। पर्ण। वर्ण। चरण। अर्ण[2]। जन। बल। लव। वन। तृणादिः।

प्रेक्षादिभ्य इनिप्रत्ययो भवति। प्रेक्षी। हलकी।

प्रेक्षा। हलका। बन्धुका। [3]ध्रुवका। क्षिपका। न्यग्रोध। इर्कुट[4]। प्रेक्षादिः।

अश्मादिभ्यो रप्रत्ययो भवति। अश्मरः[5]।

अश्मन्। [6]यूष। [7]रूष। मीन। दर्भ। वृन्द। गुड। खण्ड। [8]नग। शिखा[9]। अश्मादिः।

सख्यादिभ्यो ढञ् प्रत्ययो भवति। साखेयम्। साखिदत्तेयम्।

सखि। सखिदत्त। [10]वायुदत्त। गोहित। भल्ल। पाल। चक्रपाल। चक्रवाल। छगल। अशोक। करवीर। सीकर। सकर। सरस। समल[11]। सख्यादिः।

संकाशादिभ्यो ण्यप्रत्ययो भवति। सांकाश्यम्। काम्पिल्यम्।

संकाश। काम्पिल्य। समीर। [12]कश्मर। शूरसेन। [13]सुपथिन्। सक्थच। [14]यूप। अंश। एग। अश्मन्। कूट। मलिन। तीर्थ। अगस्ति। [15]विरत। चिकार। विरह। नासिका। संकाशादिः।

बलादिभ्यो यः प्रत्ययो भवति। बल्यः। [16]कुल्यम्।

बल। [17]वुल। तुल। उल। डुल। कवल। [18]वन। कुल। बलादिः।

पक्षादिभ्यः फक् प्रत्ययो भवति। पाक्षायणः। तौषायनः।

पक्ष। तुष। अण्ड। [19]कम्बलिक। चित्र। [20]अश्मन्। [21]अतिस्वन्। पथिन् पन्थ च[22]। पक्षादिः।

कर्णादिभ्यः फिञ् प्रत्ययो भवति। कार्णायनिः। वासिष्ठायनिः।

---

1. आवास नड वन वधूल गुहा बर्बर इत्यधिकम् ब. 2. सूल इत्यधिकम् ब. 3. बुधका ब. 4. सङ्कट कूपकाक कर्करा सङ्कटा सुकमह इत्यधिकम् ब. 5. यूथरम् इत्यधिकम् ब. 6. यूथ ब. 7. ऊष ब. 8. नख ब. 9. काटयाम इत्यधिकम् ब. 10. पायुदत्त ब. 11. सुरस रोहतमाल कदल सत्पल इत्यधिकम् ब. 12. कश्मीर ब. 13. पन्था इत्यधिकम् ब. 14. यूथ ब. 15–16. नास्ति ब. 17. पुल ब. 18. वनकुल ब. 19. वलिक ब, कम्बनिल ड. 20. नास्ति ड. 21. नास्ति ब. 22. कुम्भ सीरज सरस समल रोमक लोमन् हंसक काकण्डक अस्तिबल यमल हस्त सिंहक इत्यधिकम् ब.